Impact Factor IIFS-2.875 ISRA JIF-1.312

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

January - March 2021 Vol.02 ISSUE IV

Chief Editor : **Dr. Girish S. Koli,** AMRJ, Yawal

For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
30	उर्दू का महान कवि : डॉ. इकबाल	डॉ. शेख आफाक अंजुम	131-134
31	हिंदी दलित साहित्य में मूल्य संघर्ष	प्रा.डॉ.रविंद्र आर.खरे	135-139
32	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक समीक्षा	मीता विरमानी रीमा लांबा	140-145
33	`गाँव का मन` निबंध संग्रह में लोकजीवन और ग्राम्य प्रकृति चित्रण	डॉ. प्रमोद मनोहर चौधरी	146-149
34	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अभिव्यक्त भारतीय संस्कृति के अंतरंग	डॉ. संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी	150-153
35	उत्तरशती यात्रा साहित्य में सौंदर्यात्मकता	डॉ. विक्रम रामचंद्र पवार	154-157
36	"पीटरपौलएक्का के उपन्यासों में चित्रित आदिवासी समस्यायों का समाजशास्त्रीय अध्ययन"	प्रा.एकनाथ गणपती जाधव	158-160
37	फाँस उपन्यास के संघर्षशील किसान स्त्री पात्र	प्राजकता पवार यादव	161-164
38	ग्रामीण एवं शहरी हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों का विज्ञान विषय में उच्च मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. संगीता सराफ मोनिका चौबे	165-168
39	भारतीय वाङमय में नाट्यशास्त्र का महत्व एवं वैशिष्ट्य	डॉ. अंशुमान वल्लभ मिश्र	169-171
40	महानगरीय सभ्यता के बीच टूटते जीवन मूल्यों का चित्रण - 'नरक मसीहा'	डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे	172-175
41	भ्रष्टाचार का जीवन्त दस्तावेज- उत्कोच	डॉ. विजय एकनाथ सोनजे	176-180
42	विधवा उपन्यास की त्रासदी : तापसी	डॉ. कामिनी तिवारी	181-184
43	"विजन" उपन्यास में स्त्री संवेदना	डॉ. वसंत माळी	185-187
44	नारी विमर्श का एक नया अध्याय: शकुंतिका	डॉ.गिरीष एस. कोळी	188-191
45	बिन्दु उपेक्षित स्त्री के जीवन की व्यथा	डॉ. कामिनि तिवारी	192-195
46	अक्षयवट नाटक में चाणक्य चित्रण	डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा	196-198
47	समकालीन हिंदी आदिवासी उपन्यासों की भाषा शैली (`जंगल के आसपास` और `पिंजरे में पन्ना` के संदर्भ में)	डॉ. रमेश एस. जगताप प्रा. संतोष भिका तमखाने	199-203
48	अनामिका की कविताओं में सामाजिक बोध	डॉ. जगदीश बन्सीलाल चव्हाण	204-207
49	गुप्तोत्तर कालीन भूमि पद्धति (मध्यप्रदेश के 7 वीं सदी से 13 वीं सदी तक के विशेष संदर्भ में)	डॉ. (श्रीमति) पप्पी चैहान	208-212
50	हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा में माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान	डॉ. कांबळे आशा दत्तात्रय	213-216

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

46

अक्षयवट नाटक में चाणक्य चित्रण

डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभाग
कला , विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, यावल जि. जलगाँव

हिंदी के बहुचर्चित नाटककारों में डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का नाम महत्वपूर्ण है। उनका जन्म सन 8 फरवरी 1936 को मध्य प्रदेश (राजापूर गढ़ेवा) में हुआ। डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' अब तक बीस नाटक, तीस एकांकी, एक उपन्यास, दो कविता संग्रह, चार समीक्षा.ग्रंथ और आत्मकथा प्रकाशित हो चुकी है। डॉ. चन्द्र ने 1950 ई. में, कविता से अपना लेखन प्रारम्भ किया था। सन 1960 तक वे सभी विधाओं में लिखते रहे। इसके बाद उन्होंने विशेष रूप से नाटक में अपने को केन्द्रित किया और विशिष्ट स्थान बनाया। वृहत्तर मानव.मूल्यों की स्थापना एवं विश्व.कल्याण की भावना को लेकर चलने के कारण डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' अपने समकालीन नाटककारों में एक अलग पहचान रखते हैं तथा इसी विशेषता के कारण समकालीन नाट्य.परिदृश्य में अपनी अमिट छाप छोड़ने में समर्थ हैं।

इनके प्रमुख नाटकों में 'आकाश झुक गया', ' भस्मासुर अभी जिंदा है', 'कुत्ते', 'लड़ाई जारी है', 'भूमि की ओर', 'समवेत', 'स्वप्न का सत्य', 'अर्ध्दनारीश्वर', 'अक्षयवट' आदि नाटक प्रकाशित हो चुके है। डॉ. सुरेश शुक्ल को विविध पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। प्रथम 1968 में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा, इसके साथ–साथ 1998 में 'उत्कल युवा सांस्कृतिक संघ' कटक (उडिसा) ने 'नाटयभूषण' उपाधि से विभूषित किया। साहित्य मानव की विविधोन्मुखी भाव–भावनाओं की अभिव्यक्ती का सशक्त माध्यम हैं। अतः साहित्य की विधाओं में मन और जीवन के अत्यंत निकट की विधा है नाटक।

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का 'अक्षयवट' नाटक का प्रकाशन सन 2008 में 'साहित्य रत्नालय' कानपूर द्वारा किया गया। 'अक्षयवट' का मंचन 24 मई 1983 को 'नवआयाम साहित्यिक सांस्कृतिक मंच' बिसलपूर द्वारा प्रथम बार किया गया। नाटककार ने हमारे सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन के प्रति सजग है। भारतीय संस्कृति सारे विश्व में महान हैं। इसी संस्कृति को महान बनाने में कई भारतीय इतिहास में कई महान व्यक्तियों का योगदान हैं। इसी संस्कृति के सहारे नाटककार ने ऐतिहासिक जीवन की झलक 'अक्षयवट' नाटक में मूर्त रूप देने का सफल प्रयास किया है। अक्षयवट में चाणक्य का व्यक्ति अंकन किया गया है। ऐतिहासिक ग्रंथों में चाणक्य पर कई ग्रंथ लिखे गये है, लेकिन चाणक्य के अहम् एवं सामाजिक घात–प्रतिघात के बारे में प्रथम लिखा गया नाटक है। डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' के अनुसार 'अक्षयवट' नाटक में चाणक्य की अहम् निर्मित करनेवाले स्त्रोतों की खोज की गई है, तथा चाणक्य पर पड़े व्यक्तित्व एवं सामाजिक घात–प्रतिघात और उस पर हुई प्रतिक्रिया को नाटक में उभारा गया है। प्रस्तुत नाटयकृति में चाणक्य के बचपन से लेकर नंदवंश का समूल नष्ट तक एवं मौय साम्राज्य की स्थापना का चित्रण नाटक में उपलब्ध है। उसमें चाणक्य मुख्य रूप से है। चाणक्य के जीवन में घटित घटनाओं के कारण चाणक्य का समाज की ओर देखने का दृष्टिकोण बदल जाता है, यही चित्रण नाटककार ने बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। जो नाटक रंगमंच की दृष्टि से, पठन और पाठन की दृष्टि से अभूतपूर्व रचना है। ऐतिहासिक कथानक होने के बावजूद भाषा को संस्कृतनिष्ठ एवं क्लिष्ट नहीं बनाया बल्कि नाटक की भाषा सरल एवं रोमांचक है।

भारतीय इतिहास में चाणक्य का नाम बड़े गौरव से लिया जाता है। मौर्य वंश की स्थापना आचार्य चाणक्य की एक महान उपलब्धि हैं, और नंदवंश के विनाश के प्रमुख सूत्रधार के रूप में प्रख्यात हैं। नाटककारने चाणक्य के अन्य गुणों के साथ–साथ राजनीतिक कौशल्यों का भी अंकन किया हैं। चाणक्य का नाम विष्णुगुप्त था, उनके पिता का नाम चणक। वह पश्चिमोत्तर क्षेत्र में जीविका की खोज में पाटलीपुत्र आए थे। चाणक्य अपने पिता के आचार–विचार एवं व्यवहार की झलक थे। चाणक्य स्वभाव से अभिमानी, चारित्र्य से संपन्न एवं विषय दोषो से रहीत, स्वरूप से कुरूप, बुध्दि से तीक्ष्ण, इरादे के पक्के, प्रतिभा के धनी थे।

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

अक्षयवट नाटक के पूर्वाध्द में नंद की सभा में चाणक्य का घोर अपमान से शुरूआत होती है। नंद के घर श्राध्द पर शटकार के कहने पर तेरह ब्राह्मणों को आमंत्रित कराया गया था। शटकार को अपने बच्चों का बदला लेने के लिए चाणक्य से बड़ा कोई नंद को नहीं हरा सकता यह पता था। इसलिए चाणक्य को सभा मण्डप में ब्राह्मणों के साथ अगली पंक्ति में विराजमान किया गया था। नंद को सबसे आगे काली और कुरूप आकृति देखकर क्रोध आ गया। शटकार की योजना नुसार चाणक्य का परिचय, चणक का पुत्र यह दिया। नंद ने चाणक्य को देखकर ''राजद्रोही चणक का पुत्र ?''1 यह कहकर अपमान किया। चाणक्य का सभी ब्राह्मणों एवं समाज के सामने घोर अपमान किया। चाणक्य एक स्वाभिमानी ब्राह्मण थे। ब्राह्मणों के सम्मुख अपमान वे कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। चाणक्य के बचपन में चणक को कुशों से घाव हो गया, चाणक्य ने उसे कुशों को खोदकर मठा डालकर उसका समुल नष्ट कर दिया। आज भी चाणक्य अपने अपमान का बदला नंद वंश का समूल नष्ट करेगा।

चाणक्य बड़े सहृदयी थे। अपनी माता के झुलसती चिता पर कुद पड़े। वह अपनी माता से बड़ा प्रेम करते थे। उसी चिता में जलने की वजह से उनका चेहरा कुरूप बन गया। इसी कुरूप चेहरे के कारण उनका अपमान हो गया था। चाणक्य बिना प्रतिशोध लिए नहीं बैठ सकता, वह एक विशाल तुफान है। वह पेड़ो को जड़ो से हिला देगा। चाणक्य भावूक है तथा भावुक व्यक्ति ही प्रतिशोध लेता है। स्वाभिमान पर चाहे चोट लगने पर वह खौल उठता है। तक्षशिला में चाणक्य प्राध्यापक थे। वहा पर राजा, महाराजा, मंत्रीगणों को शिक्षा दी जाती है। उसी विद्यापीठ में नौकरी के लिए प्राध्यापक तरसते है। लेकिन चाणक्य ने वहा त्यागपत्र देकर पाटलीपुत्र में संस्कृत की पाठशाला शुरू की। वह भी तक्षशिला से उब गया था। चाणक्य पाटलीपुत्र में वररूचि की कन्या सुभाषिनी से विवाह कर स्थानबध्द होनेवाले थे।

नंदवंश विलासी एवं भोगवादी था। प्रजा को भूखा रखकर खुद भोग–विलास में लिप्त रहता था। अकाल की स्थिति में लोगों से लगान वसूल करता था। ऐसी स्थिति में लोग भूखे मर रहे थे। राक्षस एक स्वामीनिष्ठ सेवक था। राजा को प्रजा की स्थिति बताने के बाद उसका व्यवहार कुत्सित था। राजा कहता है – ''कहीं से भी अपनी जायदाद बेचे, पर लगान उसे देना होगा।''2 चाणक्य प्रजाप्रेमी है। उसे यह मंजूर नहीं था। प्रजा का यह दुःख उससे देखा नहीं गया। राजा का धर्म प्रजा का पालन होता है, प्रजा की सेवा राजा का एकनिष्ठ धर्म होता है। लेकिन नंदवंश का साम्राज्य अधम एवं विनाशकारी था। एक व्यक्ति की सोलह वर्षीय वासंती नामक लडकी गूम हो गई थी। राजा के साथ–साथ सैनिक भी भ्रष्टाचार में लिप्त थे। बेटी गुम हो जाने की फिर्याद लिखने के लिए सैनिक सोने की मोहरे मॉगता है। अतः स्पष्ट है कि समकालीन परिवेश में भ्रष्टाचार व्याप्त था।

चाणक्य में दूरदृष्टि थी इसलिए उसने नंदवंश का विनाश करने के लिए षडयंत्र शुरू किया। शटकार से मिलकर राज्य के कामकाज के बारे में महत्वपूर्ण योजनाएँ मिलने लगी। शटकार को मंत्री पद से हटाने के लिए राक्षस ने षडयंत्र का शिकार बनाया। इसलिए शटकार नंदवंश से बदला लेना चाहता है। बदले की आग में वह भी झुलस रहा है – ''मुझे सहपरिवार अंधकुप में डाला गया। वही मेरे सात बच्चे भूख से तडप–तडपकर मर गये। मैं जीवित रहा केवल नंद से प्रतिशोध लेने के लिए।''3 चाणक्य ने विशाखा और मंजरी को विषकन्या के रूप में बनाया। वह उसे वक्त आने पर नारी भोग के लालसी सैनिकों को खत्म कर सके।

चाणक्य का व्यक्तिमत्व राष्ट्रप्रेम के प्रति सजग था। राष्ट्र को एकजूट होना चाहिए, परकीय आक्रमणों से बचना चाहिए। सभी राज्यों को मिलजुलकर संघटित होकर दुश्मन का सामना करना चाहिए। लेकिन इतिहास साक्षी है सत्तापीपांसु राजा ने सिर्फ आपस में लड़ाई लड़कर मारे गये। सिंकदर ने भारत पर आक्रमण किया, पंचम नरेश ने सिंकदर के छक्के छुडवा दिये थे। एवं विवश होकर सिंकदर ने संधी कर ली। चाणक्य राजनीति में निपुण थे। वह जानते थे सिंकदर को वापिस जाने दिया तो वह फिर आक्रमण करेगा। चाणक्य कहते थे –''दुश्मन के प्रति सहृदयता अच्छी नहीं होती। सिंकदर को ऐसा सबक देना चाहिए कि वह भविष्य में कभी भारत पर आक्रमण न कर सके।''4 उन्होंने पश्चिमोत्तर गणराज्यों में दो गणराज्यों को आक्रमण के लिए तैयार कर लिया। सिंकदर की नौका झेलम एवं चिनाब के संगम पर पहुँची तो मालव एवं

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

शुद्रको ने आक्रमण कर दिया। चाणक्य के योजनानुसार सिंकदर युध्द में बुरी तरह घायल हो गया। घाव इतना गहरा था कि बगदाद आते–आते उसकी मृत्यु हो गई। उस महान विजेता सिंकदर का इतिहास पूरा हो गया। उसे चाणक्य के कूटनीति योजना ने सफल बनाया।

चाणक्य के पास अदम इच्छाशक्ति थी। नंदवंश को नष्ट करने के लिए सैनिक चाहिए। चाणक्य ने अपने दाव–पेंचों में कोई कमी नहीं रखना चाहते थे। नंदवंश का महामंत्री राक्षस भी राजनीति दाव–पेंचों में निपुण था। चाणक्य बुध्दि से तीक्ष्ण एवं वाक्पटुता के कारण डाकूओं को युध्द के लिए तैयार कर अपनी सेना में शामिल कर लिया। चाणक्य ने नंद साम्राज्य पर आक्रमण कर दिया। लेकिन नंदवंश के सैनिकों ने पीछे से वार किया। चाणक्य को पहली बार युध्द में हार हुई। हार के बाद भी वह निराश नहीं हुए। वह कहते है –''जय और पराजय दो ही परिणाम होते है, फिर दुःख क्यों, सफलता और असफलता सिक्के के दो पहलू है। कभी चित कभी पट। आज पराजित हुए है तो कल जितेंगे भी। युध्द में हार के बाद भी अटूट विश्वास के कारण वह फिर खड़े हुए। समाज में अच्छे करनेवालों की प्रशंसा होती है लेकिन हारे हुए व्यक्ति को मूर्ख की भॉति समझा जाता है। एक बच्चा खीर खा रहा था, वह जल गया। उसीसे मॉ कहती है –''तू भी चाणक्य की तरह बीच में हमला करता है। किनारे से क्यों नहीं खाता मूर्ख।''5 विद्वान व्यक्ति को अपनी गलती खुद समझ में आती है।

चाणक्य प्राचीन भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक मूल्यों के निर्वाद मापदंड व निर्धारक विकास किए गये ऐसे प्रतीक है। वह अपने नीतियों में जनता का पथप्रदर्शक का काम करते है। उन्होंने भारतीय इतिहास में राजनीति में कूटनीति तोड–जोड, दांव–पेंच जैसे चालों का सफलतापूर्वक प्रयास किया है। नंदवंश का साम्राज्य अनाचारी था। वह प्रजा का शोषण कर रही थी। चाणक्य कहते है – साम, दाम, दंड, भेद सभी नीतियों से हमें काम लेना है। अनाचारी को कूटनीति द्वारा मारने में कोई दोष नहीं। उनकी नीतियॉ हर व्यक्ति को प्रेरक साबित होती है। चाणक्य ने अपने विचारों से मौर्य साम्राज्य की नींव खड़ी की एवं अनाचारी, अधम नंदवंश का संहार किया।

चाणक्य एक आदर्श के रूप में समाज के सम्मुख है। वह संयमी तथा त्यागी थे। सुभाषिनी उनकी प्रेयसी थी उससे शादी करके जीवन बिताना उनका स्वप्न था। लेकिन अपमान का बदला लेना भी जरूरी था। चाणक्य बहुत हठी थे। जब तक नंदवंश का समूल नष्ट न हो जाए तब तक शादी नही करेंगे। सुभाषिनी के पिता के देहांत के बाद वह अकेली हो जाती है। राक्षस उसे सहारा देता है। वह डगमगा जाती है। क्या चाणक्य उसे अपनाएगा या नहीं ? सुभाषिनी को चाणक्य नंदवंश का समुल नष्ट कर पाएगा या नहीं ? यह विश्वास नहीं था। वह राक्षस से शादी कर लेती है। चाणक्य को प्रियसी के विरह का दुःख होता है। लेकिन वह चुप नहीं बैठता। अपने शिष्य एवं पर्वतेश्वर की सेना को लेकर पाटलीपुत्र की सीमा पर आक्रमण कर देता है। विषकन्या मंजरी एवं विशाखा, सेनापती एवं दूसरे पदाधिकारियों को काट लेती है। योजनानुसार राजभवन में विलक्षणा नंद के खाने में विष डाल देती है। नंद के साथ उसके नौ बच्चों की मौत हो जाती है। राक्षस को बंदी बना लिया जाता है। चाणक्य भावुक थे, सुभाषिनी का दुःख उनसे देखा नहीं गया। उसके कहने पर राक्षस को मंत्रीपद दिया।

नाटककार ने 'अक्षयवट' नाटयकृति के द्वारा चाणक्य के नीतिमूल्यों पर चर्चा के उपरान्त व्यक्तित्व का अंकन भी किया है। चाणक्य के अहं की निर्मिती एवं नंदवंश का समुल नष्ट होना यह इसका द्योतक है। नाटककार ने संपूर्ण नाटक के ऐतिहासिक कथानक को जनसामान्य के लिए बड़े सुंदर ढग से सरल एवं ग्राहय भाषा में प्रस्तुत किया है। इस नाटक में ऐतिहासिक कथानक के बावजूद भाषा को संस्कृतनिष्ठ एवं क्लिष्ट नहीं किया गया है। अक्षयवट का सफलतापूर्वक मंचन अनेक उच्चस्तरीय सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा किया गया है। अतः कहा जा सकता है कि नाटककार डॉ. सुरेश शुक्ल चंद्र अपनी नाटयकला में पूरी तरह से सफल हुए है।

संदर्भ ग्रंथ :

1) अक्षयवट– डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र',नाटक प्रकाशन संस्थान,दयानन्द मार्ग, नयी दिल्ली सन 1983 पृ.13
2) पूर्ववत पृ. 23
3) पूर्ववत पृ. 09
4) पूर्ववत पृ. 51
5) पूर्ववत पृ. 49

□ □ □

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved